IOSR Journal of Research & Method in Education (IOSR-JRME)
e-ISSN: 2320–7388, p- ISSN: 2320-737x Volume 13, Issue 1 Ser. 1 (Jan. – Feb. 2023), 66-69
www.iosrjournals.org

उच्च्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालय वातावरण व विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव का अध्ययन

शोधार्थिनी

शशि प्रभा

शिक्षा विभाग

साई नाथ विश्वविद्यालय राँची, झारखण्ड

सारांश

माध्यमिक शिक्षा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी है। माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था शिक्षा का एक ऐसा द्वार है जो एक ओर तो उच्च शिक्षा के लिए और दूसरी और रोजगार एवं जीवन यापन के प्रवेश के लिए रास्ता खोलती है। समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति को प्रशिक्षित करने का उत्तरदायित्व माध्यमिक शिक्षा पर ही है। माध्यमिक विद्यालय के व्यक्तित्व के आवश्यक गुण हो जैसे आत्म सम्मान की भावना, आत्मविश्वास, आत्मचिंतन विवेक, न्याय, विचारों की अभिव्यक्ति आदि पर बल दिया जाता है। भारत में वातावरण के क्षेत्र में 1960 के बाद अध्यन प्रारंभ हुआ भारतवर्ष में डॉ मोतीलाल शर्मा ने इस विषय पर बहुत कार्य किया है। इस दिशा में कार्य करने वाले शिक्षाविदों की मान्यता है कि जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अलग होता है और प्रभावशीलता के आधार पर इनमें हम भिन्नता देखने को भी मिलती है। अर्थात कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो हमें बहुत अधिक प्रभावित करते हैं साथ ही साथ वे स्वयं में भी समन्वित व संतुलित होते हैं और कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो प्रभावहीन तो होते ही हैं साथ ही साथ वह स्वयं में भी असंतुलित होते हैं। ठीक उसी प्रकार प्रत्येक विद्यालय का अपना-अपना वातावरण होता है। विद्यालय में विधार्थियों की आवाज स्वतः यह बताने लगती है कि विद्यालय का वातावरण कैसा है। कभी-कभी यही आवाज इतनी गंभीर होती है। जो की बालकों के अंदर के तनाव को प्रदर्शित करती है। यह विद्यालय से सम्बंधित, विद्यालय प्रशासन से सम्बंधित एवं शिक्षा से सम्बंधित तनाव हो सकता है। तनाव व्यक्तियों और छात्र-छात्राओं के समक्ष कई रूपों में पाई जाती है। जैसे निम्न प्रदर्शन स्तर का परिहार, नकारात्मक परिणामों की चिंता इत्यादि। इस प्रकार हम कह सकते है कि शैक्षिक तनाव छात्र-छात्राओं को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। मुख्य शब्द - माध्मिक शिक्षा, विद्यालय वातावरण, शैक्षिक तनाव।

प्रस्तावना

माध्यमिक शिक्षा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी है। माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा का वह समय है जो मुख्य रूप से लगभग 12 से 17 वर्ष के बीच की आयु वालों के लिए होता है। इसमें शिक्षा का बल सीखने के आधारभूत अभिव्यक्ति और संरचना की अपेक्षा इस बात की खोज करने पर हो जाता है कि इन साधनों का उपयोग विचार और जीवन के क्षेत्रों में किस प्रकार किया जा सकता है। माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था शिक्षा का एक ऐसा द्वार है जो एक और तो उच्च शिक्षा के लिए और दूसरी ओर रोजगार एवं जीवन यापन के प्रवेश के लिए रास्ता खोलती है। समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति को प्रशिक्षित करने का उत्तरदायित्व माध्यमिक शिक्षा पर ही है। है। इसलिए माध्यमिक शिक्षा को मजबूत कड़ी माना जाता है। माध्यमिक शिक्षाकिशोरावस्था की जनशक्ति का विशेष स्रोत है। अतः माध्यमिक शिक्षा किशोरावस्था की जनशक्ति का विशेष रूप है इसी संदर्भ में आज कहते है कि देश के भावी कर्णधार माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में ही बनते और बिगड़ते हैं। सभी क्षेत्रों में नेतृत्व करने की क्षमता इस स्तर पर उत्पन्न हो जाती है। माध्यमिक विद्यालय के व्यक्तित्व के आवश्यक गुण हो जैसे आत्म सम्मान की भावना, आत्मविश्वास, आत्मचिंतन विवेक, न्याय, विचारों की अभिव्यक्ति आदि पर बल दिया जाता है।

यादव, (2015) ने 'माध्यमिक स्तर पर विद्यालय वातावरण का विद्यार्थियों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'। निष्कर्ष के रूप में पता चला कि विद्यालय वातावरण की सीमा (सृजनात्मक, उद्दीपक संज्ञानात्मक, प्रोत्साहन, अनुमतिकरण स्वीकृति तथा नियंत्रण) किसी भी विमा का प्रभाव विद्यालय के शैक्षिक समायोजन पर नहीं पड़ता है। विद्यालय के

वातावरण की अवधारणा का प्रादुर्भाव अमेरिका में सन् 1954 में हुआ 1959 में हेल्पिंन तथा क्राफ्ट ने इस विषय को पुनः प्रशासनिक डायरी के रूप में प्रस्तुत किया। भारत में वातावरण के क्षेत्र में 1960 के बाद अध्यन प्रारंभ हुआ भारतवर्ष में डॉ मोतीलाल शर्मा ने इस विषय पर बहुत कार्य किया है। इस दिशा में कार्य करने वाले शिक्षाविदों की मान्यता है कि जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अलग होता है और प्रभावशीलता के आधार पर इनमें हम भिन्नता देखने को भी मिलती है। अर्थात कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो हमें बहुत अधिक प्रभावित करते हैं साथ ही साथ वे स्वयं में भी समन्वित व संतुलित होते हैं और कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो प्रभावहीन तो होते ही हैं साथ ही साथ वह स्वयं में भी असंतुलित होते हैं। ठीक उसी प्रकार प्रत्येक विद्यालय का अपना–अपना वातावरण होता है। विद्यालय में विद्यार्थियों की आवाज स्वतः यह बताने लगती है कि विद्यालय का वातावरण कैसा है। कभी–कभी यही आवाज इतनी गंभीर होती है। जो की बालकों के अंदर के तनाव को प्रदर्शित करती है। वह विद्यालय से सम्बंधित, विद्यालय प्रशासन से सम्बंधित एवं शिक्षा से सम्बंधित तनाव हो सकता है। तनाव स्वभावगत चिंता हो सकती है या फिर अवस्थागत। शैक्षिक तनाव एक प्रकार का अवस्थागत का तनाव होता है– जिसका संबंध शैक्षणिक संस्थानों से आने वाले आसन्न खतरे से है। जिसमें अध्यापक, कुछ विषय जैसे गणित, अंग्रेजी, सामाजिक–विज्ञान, हिंदी, कंप्यूटर, एवं विद्यालय वातावरण इत्यादि सम्मिलित हैं। जिन बालकों के विद्यालय में अच्छा वातावरण प्रदान किया जाता है। उनमे अध्ययनरत विधार्थियों में तनाव की स्थिति कम रहती है और वह अपने आप को अधिक समायोजित कर पाते हैं।

त्रिपाठी, (2014) "माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालय वातावरण का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक तनाव के संदर्भ में अध्ययन" निष्कर्ष के रूप में पता चला कि यूपी बोर्ड आई.सी.एस.सी. बोर्ड एवं सीबीएसई बोर्ड के माध्यमिक विद्यालय अधिकांश विद्यार्थियों का रचनात्मक प्रेरणादायक वातावरण उच्च स्तर का पाया गया। सबसे ऊंची यूपी बोर्ड के माध्यमिक विद्यालयों का रचनात्मक प्रेरणादायक वातावरण पाया गया। यूपी बोर्ड के माध्यमिक विद्यालय अधिकांश विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव मध्यम स्तर का, आई.सी.एस.सी. बोर्ड के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव निम्न स्तर का एवं सीबीएसई बोर्ड के माध्यमिक विद्यालयों विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव उच्च स्तर का पाया गया। यदि घर और स्कूल में किशोरों को अच्छा वातावरण मिलता है तो किशोरों की भावुकता की भावना प्रभावित होती है। एक समतामूलक तथा मानवतामूलक समाज जिसमें निर्बल का शोषण कम से कम हो, की स्थापना के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है और इसकी प्राप्ति के स्रोत हैं विद्यालय। एक विद्यार्थी दिन की एक नियत अवधि के दौरान ही विद्यालय में रहता है।

अजीम,(2013) ने अपने शोध अध्ययन "स्टडी आफ एकेडमिक एंजायटी एंड एकेडमिक अचीवमेंट अमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट" में पाया कि अकादमिक चिंता और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक ऋणात्मक से सहसंबंध है। और इस बात की पुष्टि की कि अकादमिक चिंता का एक मध्यम स्तर विद्यार्थियों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए वांछित है किंतु जब यह अकादमिक चिंता अपनी सीमा पार करती है तो शैक्षणिक उपलब्धि में ह्रास होता है।

रावल (1984) **ने–**घर और स्कूल के वातावरण के किशोरों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि घर और स्कूल के वातावरण का सीधा प्रभाव किशोरों के व्यक्तित्व पर पड़ता है।

तनाव व्यक्तियों और छात्र–छात्राओं के समक्ष कई रूपों में पाई जाता है। जैसे निम्न प्रदर्शन स्तर का परिहार, नकारात्मक परिणामों की चिंता इत्यादि। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शैक्षिक तनाव छात्र–छात्राओं को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। सामान्यतः यह देखा गया है कि जिन विद्यालयों में अच्छा वातावरण भौतिक सुख साधन शिक्षा से संबंधित होते हैं। वहाँ पर अध्ययनरत विधार्थियों में शैक्षिक तनाव कम पाया जाता है। जिन विद्यालयों में भौतिक सुख साधन से लेकर प्रशासन और पाठ्य सहगामी क्रियाओं का प्रयोग उचित तरीके से नहीं किया जाता हैं। उन विद्यालयों के बच्चों के अंदर शैक्षिक तनाव जैसी बहुत सारी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत लघु शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

- उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्रों के शैक्षिक तनाव के मध्य सहसंबध का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्राओं के शैक्षिक तनाव के मध्य सहसंबध का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व विद्याथियों के शैक्षिक तनाव के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तुत लघु शोध हेतु निम्नलिखित परिकल्पनायें हैं–

- उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्रों के शैक्षिक तनाव के मध्य सार्थक सहसंबध हैं।
- उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्राओं के शैक्षिक तनाव के मध्य सार्थक सहसंबध हैं।
- उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव के मध्य सार्थक सहसंबध हैं।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ताओं द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और प्रस्तुत अध्ययन के न्यादर्श का चुनाव करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श के माध्यम से 200 विद्यार्थियों में 100 छात्र एवं 100 छात्राओं का चयन सुनिश्चित किया गया है।

उपकरण

विद्यालय वातावरण परिसूची– डॉ. के. एस. मिश्रा (SEI)का प्रयोग किया गया है जिसका विश्वसनीयता गुणांक 0.70 है।

शैक्षिक तनाव मापनी –डॉ. ए. के. सिंह तथा (श्रीमती) ए. सेन गुप्ता (AASC) का प्रयोग किया गया है। जिसका विश्वसनीयता गुणांक 0.433 है, जो दशमलव 0.01 स्तर पर विश्वसनीय है। इस परीक्षण का वैधता गुणांक 0.31 से 0.57 के बीच रहता है, जो 0.01 पर वैद्य है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं का परीक्षण

प्रथम परिकल्पना परीक्षण

उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्रों के शैक्षिक तनाव के मध्य सहसंबध का अध्ययन करना।

H_1:उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्रों के शैक्षिक तनाव के मध्य सार्थक सहसंबध होता है।

H_0:उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्रों के शैक्षिक तनाव के मध्य सार्थक सहसंबध नही होता है।

उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्राओं के शैक्षिक तनाव के मध्य सहसंबध प्रदर्शित तालिका।

कुल छात्र	चर	सहसंबंध गुणांक	परिणाम
100	विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक तनाव	0.202	निम्न धनात्मक सहसंबंध

उपर्युक्त के अवलोकन से स्पष्ट है कि विद्यालय वातावरण एवं छात्रों के शैक्षिक तनाव के मध्य में सहसंबंध गुणांक मान 0.202 प्राप्त हुआ है। हमारी शून्य परिकल्पना **उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्रों के शैक्षिक तनाव के मध्य सार्थक सहसंबध नही है।** अस्वीकृत होती है और शोध परिकल्पना **उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्रों के शैक्षिक तनाव के मध्य सार्थक सहसंबध होता है।** स्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हैं कि विद्यालय वातावरण व शैक्षिक तनाव में निम्न धनात्मक सहसंबंध हैं।

द्वितीय परिकल्पना परीक्षण

उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्राओं के शैक्षिक तनाव के मध्य सहसंबध का अध्ययन करना।

H_2:उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्राओं के शैक्षिक तनाव के मध्य सार्थक सहसंबध होता है।

H_0:उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्राओं के शैक्षिक तनाव के मध्य सार्थक सहसंबध नही होता है।

उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्राओं के शैक्षिक तनाव के मध्य सहसंबध प्रदर्षित तालिका।

कुल छात्र	चर	सहसंबंध गुणांक	परिणाम
100	विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक तनाव	0.187	अत्यन्त निम्न धनात्मक सहसंबंध

उपर्युक्त के अवलोकन से स्पष्ट है कि विद्यालय वातावरण एवं छात्राओं के शैक्षिक तनाव के मध्य में सहसंबंध गुणांक मान 0.187 प्राप्त हुआ। हमारी शून्य परिकल्पना **उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्राओं के शैक्षिक तनाव के मध्य सार्थक सहसंबध नही होता है।** अस्वीकृत होती है और शोध परिकल्पना **उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व छात्राओं के शैक्षिक तनाव के मध्य सार्थक सहसंबध होता है।** स्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हैं कि विद्यालय वातावरण व शैक्षिक तनाव के मध्य अत्यन्त निम्न धनात्मक सहसंबंध हैं।

तृतीय परिकल्पना परीक्षण

उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव के मध्य सहसंबध का अध्ययन करना।

H_3:उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व विद्याथियों के शैक्षिक तनाव के मध्यसार्थक सहसंबध होता है।

H_0:उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व विद्याथियों के शैक्षिक तनाव के मध्यसार्थक सहसंबध नही होता है।

उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व विद्याथियों के शैक्षिक तनाव के मध्य सहसंबध प्रदर्शित तालिका।

कुल छात्र	चर	सहसंबंध गुणांक	परिणाम
200	विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक तनाव	0.139	अत्यंत निम्न धनात्मक सहसंबंध

उपर्युक्त के अवलोकन से स्पष्ट है कि विद्यालय वातावरण एवं विद्याथियों के शैक्षिक तनाव के मध्य में सहसंबंध गुणांक मान 0.139 प्राप्त हुआ है। हमारी शून्य परिकल्पना **उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व विद्याथियों के शैक्षिक तनाव के मध्य सार्थक सहसंबध नही होता है।** अस्वीकृत होती है और शोध परिकल्पना **उच्च माध्यमिक विद्यालय के वातावरण व विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव के मध्य सार्थक सहसंबध होता है।** स्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता हैं कि विद्यालय वातावरण व शैक्षिक तनाव के मध्य अत्यंत निम्न धनात्मक सहसंबंध हैं।

निष्कर्ष एवं उसकी व्याख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा **"उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालय वातावरण व विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव के मध्य सहसम्बंध का अध्ययन"** किया गया। शोध समस्या के सुझावात्मक उत्तर के रूप में विकसित की गई परिकल्पनाओं के परीक्षण के पश्चात शोधकर्ता इस स्थिति में आ गया है कि वह परीक्षित परिकल्पनाओं के आधार पर कुछ निष्कर्ष निकाल सके।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत आंकड़ों का विश्लेषण करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

- उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यालय वातावरण व छात्रों के शैक्षिक तनाव के मध्य निम्न धनात्मक सहसंबंध हैं।
- उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यालय वातावरण व छात्राओं के मध्य शैक्षिक तनाव के मध्य अत्यंत निम्न धनात्मक सहसंबंध हैं।
- उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यालय वातावरण व विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव के मध्य अत्यंत निम्न धनात्मक सहसंबंध हैं।

उपर्युक्त संपूर्ण प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालय वातावरण व विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव के मध्य **अत्यंत निम्न धनात्मक** व छात्रों के शैक्षिक तनाव के मध्य **निम्न धनात्मक** एवं छात्राओं के शैक्षिक तनाव के मध्य **अत्यंत निम्न धनात्मक** सहसंबंध है। अतः हम कह सकते है कि विद्यार्थियों में विद्यालय वातावरण कि वजह से विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव पर प्रभाव पड़ता है। लेकिन यह पता लगाना मुश्किल हो जाता है कि विद्यालय वातावरण के वह कौन–कौन से कारक जो विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन को प्रभावित करते है। जैसे विद्यालय में अध्यापकों की शिक्षण कार्य के प्रति उदासीनता, शिक्षण कार्य में प्रयुक्त भौतिक संसाधन की अनुपलब्धता, पुर्नबलन, गैर शैक्षणिक कार्य में जोर देना इत्यादि के कारण विद्यार्थियों में तनाव रहता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- शर्मा, आर0 ए0 (2014); भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास मेरठः आर० लाल बुक डिपो.
- आर्य, ए0 (2017); उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का विद्यार्थियों की अधिगम शैली पर प्रभाव का अध्ययन अप्रकाशित एम०एड० लघु शोध प्रबंध शिक्षाशास्त्र. शिक्षा विभाग सी०एस०जे०एम०यू० कानपुर।
- त्रिपाठी,एस0 (2014): "माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालय वातावरण का विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक तनाव के संदर्भ में अध्ययन", शोध प्रबंध शिक्षाशास्त्र. शिक्षा विभाग सी०एस०जे०एम०यू० कानपुर।
- ए0 गुप्ता (2004); सरकारी तथा गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन" शोध प्रबंध शिक्षाशास्त्र. शिक्षा विभाग सी०एस०जे०एम०यू० कानपुर।
- ए0 अजीम, (2013) ने अपने शोध अध्ययन "स्टडी आफ एकेडमिक एंजायटी एंड एकेडमिक अचीवमेंट अमंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट